विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम दिनांक -२३ - ०६ - २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ – ८ दोहावली के बारे में अध्ययन करेंगे।

(१)जो जाकौ गुन जानही सो तिहिँ आदर देत। कोकिल अंबहि लेत है काग निबौरी लेत॥
भावार्थ: कवि वृंद कह रहे हैं कि जो व्यक्ति जिस वस्तु का गुण जानता है वह उसी वस्तु को आदर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, कोयल आम को पसंद करती है और कौआ निबौरी को प्रिय मानता है।

(२)सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय। पवन जगावत आग कौं दीपहि देत बुझाय॥

भावार्थ: कवि कह रहे हैं कि जो व्यक्ति शक्तिशालीहोता है, उसी के सहायक अधिकांश लोग बनते हैं।स्पष्ट शब्दों में, शक्तिशाली के साथ सभी आकर केखड़े हो जाते हैं किंतु निर्बल या कमज़ोर व्यक्ति केसाथ कोई भी उसकी सहायता के लिए नहीं आता है।उदाहरण के लिए यह सत्य ही है कि पवन शक्तिशालीहोता है, इसलिए वह आग को प्रदीप्त कर देता है किंतुदीपक कमज़ोर होता है इसलिए वह उसको बुझा देताहै।

(३)अपनी पहुँच बिचारि कैं करतब करियै ठौर। तेते पाँव पसारियै जैती लांबी सौर॥

भावार्थ: अपनी सामर्थ्य शक्ति के हिसाब से ही व्यक्तिको कोई काम करना चाहिए। यानी जितनी लम्बी सौ रहै, उतने ही पाँव पसारने चाहिए।

(४)करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान।। कुए से पानी खींचने के लिए बर्तन से बाँधी हुई रस्सी कुए के किनारे पर रखे हुए पत्थर से बार -बार रगड़ खाने से पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं। ठीक इसी प्रकार बार -बारअभ्यास करने से मंद बुद्धि व्यक्ति भी कई नई बातें सीख कर उनका जानकार हो जाता है।

(५)सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात। ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै, बिन खरचै घट जात।। "सरस्वती यानी ज्ञान के भंडार की एक विशेषता है कि इसे जितना साझा किया जाए यह उतना ही बढ़ता है। यदि ज्ञान/जानकारी साझा न की जाए तो यह निरंतर घटती रहेगी।"